VIDYA BHAVAN, BALIKA VIDYAPEETH

SHAKTI UTTHAN ASHRAM, LAKHISARAI, PIN:-811311

SUBJECT:- CCA **CLASS:-** XTH 'D' **DATE:**25/12/XX

CLASS TEACHER:- MR. NEEL NIRANJAN

CCA (CHRISTMAS DAY)

यीशु के जन्म की कहानी

मैरी (Mary) नाम की एक जवान औरत नाजरेथ नामक एक शहर में रही और वह यूसुफ नामक एक आदमी से जुड़ी हुई थी। एक रात, ईश्वर ने मैरी के पास गेब्रियल नाम की एक परी को भेजा। परी ने मैरी से कहा - ईश्वर आपसे बहुत खुश है और आप जल्द ही गर्भवती हो जाओगी और एक बच्चे को जन्म दोगी। उसको यीशु नाम दें क्योंकि वह ईश्वर का पुत्र होगा। मैरी डर गई लेकिन ईश्वर पर विश्वास करती थी। उसे भरोसा था की सब ठीक रहेगा।

परी ने मैरी को अपने चचेरे भाई एलिज़ाबेथ और उसके पति Zachariah के साथ रहने के लिए कहा क्योंकि वे जल्द ही एक ऐसे बच्चे के माँ-बाप होंगे जो यीशु के लिए दुनिया का रास्ता तैयार करेंगे। मैरी अपने चचेरे भाई के साथ तीन महीने रहती है और नाज़रेथ लौट आयी। इस बीच यूसुफ मैरी के बच्चे होने के बारे में चिंतित था। लेकिन उसे एक देवदूत सपने में दिखाई दिया और उसे बताया की मैरी ईश्वर के पुत्र को जन्म देंगी। उसने उसे ने डरने और मैरी को अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार करने के लिए कहा।

यीशु का मतलब है उद्धारकर्ता और बच्चा वास्तव में लोगों के लिए एक उद्धारक होगा। यूसुफ सपने से जाग गया और अगले ही दिन यूसुफ और मैरी ने एक दुसरे से शादी कर ली।

कुछ समय बाद, यूसुफ और मरियम को बेतलेहेम जाना पड़ा जो नज़रेथ से लंबा दूर था। मैरी को बच्चा होने में ज्यादा वक्त नहीं था इसलिए उन्होंने धीमी गति से यात्रा की। जब वे बेथलहम पहुंचे तो उनके पास रहने के लिए कोई जगह नहीं थी क्योंकि सभी सराय और आवास अन्य लोगों के द्वारा कब्जा कर लिए गए थे।

यूसुफ और मरियम ने गायों, बकरियों और घोड़ों के रहने के स्थान पर शरण ली और उसी रात यीशु का जन्म हुआ। जीसस को जन्म होने के बाद मंदिर में रखा गया था (एक जगह जहाँ जानवरों का बसेरा था) और पहने हुए पकड़े में लपेटे थे। चरवाह अपनी भेड़-बकरियों को संभालने आए तो उन्हें एक परी दिखाई दी। देवदूत ने उन्हें बताया की आपका उद्धारकर्ता आज बेथहलम में पैदा हुआ था। चरवाहों ने यकीन नहीं किया लेकिन जब उन्होंने यूसुफ, मरियम और बच्चे यीशु को देखा तो आश्चर्यचकित और खुश हुए।

तीन बुद्धिमान पुरुष उज्ज्वल सितारे का पीछा करते गए। जब तक वे स्थिर स्थान पर नहीं आए जहाँ यीशु का परिवार रहता था। उन्होंने ने उन्हें उपहार दिए और ईश्वर के पुत्र के रूप में पूजा की। वे यह भी जानते थे की राजा बुरा था। इसलिए उन्होंने उसे उस स्थान के बारे में नहीं बताया जहाँ बच्चा यीशु था। यूसुफ को सपने में एक परी ने चेतावनी दी थी की राजा हरोदेस यीशु को मारने के लिए उसकी खोज करेगा। इसलिए अगर वे मिस्र चले जाए तो महफूज रहेंगे।

यह वह जगह थी जहाँ वे दुष्ट राजा की मृत्यु तक रहे थे। जब हरोदेस यीशु को खोजने में नाकाम रहा तो उसने बेथहलम के सभी छोटे बच्चों को मारने का आदेश दिया। हरोदेस की मृत्यु के बाद यीशु और मरियम ने मिस्र छोड़ दिया और इजराइल की यात्रा की। उन्होंने अपना बाकि जीवन नाजरेथ में बिताया।

यह यीशु के जन्म की कहानी है।